(ग) दक्षिणी मन्दिर समूह - यह खजुराहो गांव के दक्षिण की ओर स्थित होने के कारण इस समूह को दक्षिण मन्दिर समूह कहा जाता है।

- दुल्हादेव मन्दिर - चन्देल राजवंश द्वारा बनवाये गये मन्दिरों में सबसे नया शिव मन्दिर है। जिसका निर्माण 1100 से 1500 ई० के मध्य हुआ था। इस मन्दिर की रचना मण्डप जैसी है। और नृत्य के लिए चबुतरे बने हैं। यह निरन्धार शैली का बना है। गर्भगृह में शिवलिंग है म० की बाहरी दीवारों पर विभिन्न शैली से सज्जित व कतारों में प्रतिमा बनी है। द० आलों में अन्धकासुर वध करते विष्णु भगवान को दिखाया है।

- चतुर्भुज मन्दिर - मन्दिर की बाह्य दीवारों पर अंकित प्रतिमायें बहुत उल्लेखनीय नहीं हैं। फिर भी "लक्ष्मी की नरसिंह प्रतिमा व अर्धनारीश्वर रूप में भगवान शिव की प्रतिमा है। गर्भगृह में भगवान शिव की चतुर्भुज प्रतिमा है"।

विशेषताएं — खजुराहो चन्देल कला का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र था। स्टैला क्रैमरिश के अनुसार - चन्देल मूर्तिकला में भारतीय कला के मौलिक तत्व विद्यमान हैं। चन्देल कला पर पूर्ववर्ती प्रतिहार कला का प्रभाव स्पष्ट है। स्त्री पुरुषों की शरीर रचना में मांसलता तथा यौवन की पुष्टता है। नेत्रों, भौंहों नासिका, ओठों को विशेष ध्यान से बनाया गया है। आंखें खुली तथा लम्बी हैं। विभिन्न भंगिमा व मुद्राओं में रसिकता को उभारा है। नारी की लावण्यमयी अदभुत भंगिमा युक्त, शरीर के लयात्मक मोड़, यौवन का चरमोत्कर्ष भावों की उत्कृष्ट व्यंजना देखने को मिलती है।

[signature] 6April2020

डॉ० पूर्णिमा वशिष्ठ
ललित कला विभाग

कन्दरिया महादेव मन्दिर – यह राजा विद्याधर द्वारा 1065 ई० के लगभग बनवाया गया शिव मन्दिर है। यह 117 फीट ऊँचा व इतना ही लम्बा तथा 66 फुट चौड़ा है। इस मन्दिर के गर्भगृह में संगमरमर का बना शिवलिंग है। जो अन्य मन्दिरों से वृहत व विशाल है। मन्दिर का प्रवेश द्वार कन्दरा जैसा है। इसलिए इसका नाम कन्दरिया शिव मन्दिर पड़ा।

(ब) पूर्वी मन्दिर समूह – इसमे हिन्दू, ब्राह्मा, वामन व जवारी म० के अतिरिक्त 4 जैन मं० भी बने है।

- हनुमान की मूर्ति – यह मूर्ति गांव की ओर जाने वाले रास्ते पर बने है। जिसे श्रद्धालुओ ने सिन्दूर से रंग दिया था यह शिलालेखों के अनुसार यह खजुराहो मन्दिर से पुराना है।
- ब्रह्मा मन्दिर – 900 ई० के लगभग लावा व बालू पत्थर द्वारा निर्मित यह मन्दिर निनोरा ताल के पूर्वी किनारे पर स्थित पिरामिड शैली में बना हुआ है। इसके अन्दर चतुर्मुखी शिवलिंग है। इसके प्रवेश द्वारा पर ब्राह्मा, शिव व विष्णु की प्रतिमा है। और गंगा-यमुना की मूर्तियां भी विद्यमान है।
- वामन मन्दिर – ब्रह्मा मन्दिर के लगभग उ० पूर्व में स्थित है। इसमे विष्णु भगवान की वामन अवतार के रूप की अद्भुत प्रतिमा है। दीवारो पर दो-चार ही आलिंगन के दृश्य है। पश्चिमी द्वार पर शिव विवाह का दृश्य विद्यमान है।
- जवारी मन्दिर – वामन मन्दिर से लगभग 200 मी० दूर द० की ओर छोटा सा मन्दिर है। जो अपनी सुन्दरता व विशेषताओ को लिए है। यह विष्णु भगवान का मन्दिर है। प्रवेश द्वार पर मकर तोरण है। जो छोटा है गर्भगृह में विष्णु की प्रतिमा (खण्डित) है। जो वैकुण्ठ रूप को दिखलाती है। दिगपालो की प्रतिमा आलो में स्थित है।
- जैन मन्दिर समूह – यहां पर जैन म० समूह में सबसे उल्लेखनीय मन्दिर - पार्श्वनाथ मन्दिर 950 ई० मे बना था यह पंचरथ शैली का है। बाहरी दिवारो पर अष्ट दिग्पालों की प्रतिमा बनी है। द० दीवार लक्ष्मी विष्णु की प्रतिमा व नायिकाओ की प्रसिद्ध मुद्रा, काजल लगाते, महावर लगाना मूर्तियां विद्यमान है। कामदेव का चित्रण केवल यही पर पर हुआ है। आदिनाथ मन्दिर निरन्धार शैली का है। इसके अन्दर जैन तीर्थकर की प्रतिमा बनी है। शान्ति मन्दिर – इसके गर्भगृह की मूर्ति 4.5 मी० की है। यह 11वीं शताब्दी मे बनी है जैन श्रद्धालु अब भी धार्मिक अनुष्ठान के लिए आते है।

- विश्वनाथ मन्दिर — चन्देल राजवंश के राजा धन्गदेव वर्मन' के द्वारा 1002 ई० मे निर्मित किया गया था। समय के साथ अब यहां केवल दो उप-मन्दिर बचे है। यहां पर भी लक्ष्मण मन्दिर की तरह ही भगवान श्री गणेश शिव, वैष्णवी, अन्य सभी देवी की मूर्तियो के अतिरिक्त विभिन्न कतारो व पैनलो में उस समय के जीवन की झांकी प्रस्तुत करती हुई विभिन्न प्रकार की (नृत्य, संगीत, रासलीला व विभिन्न उत्सवो, विवाह, युद्ध चंवर डुलाने वाली दासियों, विभिन्न मुद्राओ का चित्रण हुआ है।

- पार्वती मन्दिर — सन 1880 ई० मे चुने एवं ईंट से पूर्णत: नया निर्मित मन्दिर विश्वनाथ मन्दिर के दक्षिण प० में स्थित है। इस पर भी अन्य मन्दिरो की भांति तीनो लोको का चित्रण है। गर्भ गृह में समभंग मे बनी भगवती पार्वती की प्रतिमा है। मन्दिर पर केवल एक ही शिखर सुसज्जित है। व गर्भगृह के रूप में वृहत चबूतरे पर निर्मित है।

- चित्रगुप्त मन्दिर — खजुराहो में बने मन्दिरो मे केवल यही एकमात्र "सूर्य मन्दिर है। जो निरन्धार शैली में बना है। 11वी शताब्दी के उत्तरार्ध मे "महाराजा गण्डदेव वर्मन' के द्वारा निर्मित करवाया गया था इस मन्दिर मे गर्भगृह मे स्थित रथारुढ भगवान सूर्य की प्रतिमा के दाहिने ओर हाथ में लेखनी लिए चन्द्रगुप्त की खण्डित प्रतिमा है। इसमे मे अभिसारिकाओ, शालभंजिका, आलिगनो मे युगल प्रतिमाएं महत्वपूर्ण है।

- देवी जगदम्बा मन्दिर - इसका निर्माण भी 'गण्डदेव वर्मन' ने करवाया था। यह मुलत: विष्णु का मन्दिर था। लेकिन सन 1880 ई० में महाराजा छत्तरपुर ने मां जगदम्बा की प्रतिमा का निर्माण करवाया था। इसमे हवनकुण्ड के साथ विष्णु का भी दृश्य गर्भगृह के द्वार से दिखायी पड़ता है। वाह्य दीवारो पर भी आलिगंनबद्द मूर्तियां प्रसिद्ध है।

- महादेव मन्दिर - कन्दरिया महादेव एवं जगदम्बा के बीच में छोटे चबुतरे पर बना भगवान शिव का मन्दिर है। इसका छोटा सा चबूतरा ही द्रष्टव्य है। इसमें रेखी प्रतिमा मे चन्देल राज्य वंश के प्रथम 'राजा चन्द्रवर्मन 'को सिंह से लड़ते दिखलाया गया है। यह चिहन चन्देल राजवंश का है।